

# विचित्रोपदेश ॥

जिसमें

सुन्दर २ सामयिक कवित्त सवैया व षट्-  
पदादि प्राचीन व वर्तमान कवियों  
के संग्रह किये गये हैं ॥

वही

सम्पूर्ण चातुर्य पुरुषों के अवलोकनार्थ

तीसरी बार



लखनऊ

487

सुपरिटेण्डेंट बाबू मनोहरलाल भार्गव बी.ए., के प्रबन्ध से

मुंशी नवलकिशोर सी. आई. ई., के छापेखाने में  
छपा-सन् १९१३ ई० ॥





## विचित्रोपदेश ॥

दो० करम काल के दश निरखि, जगके विविधचरित्र ।  
करि प्रणाम प्रभुको करों, संग्रहचित्रविचित्र ॥१॥

क० कूर भये कुवँर मजूर भये मालकार, शूर  
भये गुपत अशूर भये जवरे । दाता भये कृपण अ  
दाता कहैं दाता हम, धनी भये निधन निधन भये ग  
बरे ॥ सांचन की बात नाप त्यात को ऊजग मांभ,  
राज दरबार न बुलै ये लोग लबरे । भनत प्रवीन अ  
बछीन भई हिम्मत सो, कलियुग अदल बदल डारे  
सिगरे १ ॥ सवैया ॥ खाय के पान बिदारत ओठ हैं  
बैठि सभा में बने अलबेला । धोती किनारी की सारी  
सी ओढ़त पेट बढ़ाय किये जस थेला ॥ बंशगुपाल



बखानिकहैं सुनो भूपकहाय बने फिरि छेला । शान  
 करें बड़ी साहिबी की अरुदान में देतना एक ऊधेला  
 २ ॥ कवित्त ॥ बारी और खंगारना ऊधी मर कुहौर  
 काछी, खाटिकदसौं धीये हजूर को सुहात हैं । कोल  
 गोड़गजर अहीरतेली नीच सबै, पास के रहेते महा  
 ऊंचे भये जात हैं ॥ बुध से न राजन के निकट हमेश  
 बसैं, कूकर बिलार कहा गुण अधिकत हैं । दूरि  
 ही गयन्द बांधे दूरि गुणवान ठाढ़े, गज और गुणी को  
 कहामोल घटि जात हैं ३ ॥ छप्पय ॥ मरै समसर  
 दार मरै वह कट्टर टट्टू । मरै हठीली नारि मरै वह  
 पुरुष निखट्टू ॥ ब्राह्मण सो मरि जाय हाथ लै मदि  
 राप्यावै । पूत वही मरि जाय जु कुल में दाग लगावै ॥  
 बेनिया वराजामरै नींद धड़ा धर सोइये । बैताल  
 कहै विक्रम सुनो एते मरे नरोइये ४ सरसर हंस न  
 होत बाज गजराज न घर घर । तरुत रुसुफर न  
 होत नारि पतिव्रता न घर घर ॥ तनतन सुमति न



होतमलैगिरिहोतनवनवन । फनफनमणिनहिं  
 होतमुक्कजलहोत न घनघन ॥ रनरनशूर न  
 होतहैंजनजनहोत न भक्तिहरि । नरहरिनिरखि  
 कवित्तकहिसवनरहोत न एकसरि ५ ॥ कवित्त ॥  
 एरेगुनीगुनपाइचातुरीनिपुनपाइ, कीजियेनमै  
 लीमैनकाहूजोकछूकरी । वीरनविरानेद्वारगये  
 कोयहीसुभाव, मनअपमानकाहूरेकरीकिजूक  
 री ॥ कूरऔकबिन्दचलेजातहैंसभाकेमध्य, तो  
 सोतौ हटकिदेवीदासपलटूकरी । दरवाजेगज  
 ठाढ़ेकुकरीसभाकेमध्य, कूकरीसोंकूकरीऔतूक  
 रीसोंतूकरी ६ ॥ छप्पय ॥ शशिकलंकरावणवि  
 रोधहनुमत्तसोवनचर । कामधेनुसोपशूजाय  
 चिन्तामणिपत्थर ॥ अतिरूपातियबांभगुणीको  
 निरधनकहिये । अतिसमुद्रसोखारिकमलबिच  
 कंटकलहिये ॥ जैजुब्यासखेवट्टनीदुर्वासाआसन  
 डिग्यो । कविगीधकहैसुनुरेगुणीकोउनकृष्णनि



मलरच्यो ७ ॥ कवित्त ॥ दानबिनदरबनिदान  
 ठहरानकौन, ज्ञानबिनयशअपयशकरिकरिगे ।  
 कविरायसंतनिसुभायसुने सूमनके, धरमबिही  
 नधनधराधरिधरिगे ॥ कामआयेकाहूकेनदाम  
 दुहं दीननके, धामगाड़ेगाड़ेसबगथगरिगरिगे ।  
 बोरिबोरिविरदबड़ाईबेशहरकेते, जोरिजोरिकृप  
 णकरोरिमरिमरिगे ८ गुणकोनपूछैकोऊऔगुण  
 कीबातपूछै, कहाभयोदर्दकलियुगयोखरानोहै ।  
 पोथीऔपुराणज्ञानठट्टनमेंडारदेत, चुगलचवा  
 इनकोमानठहरानोहै ॥ कादरकहतजासों कछु  
 कहिबेकी नाहिं, जगत की रीतिदेखिचुपमनमा  
 नोहै । खोलि देखो हियो सबभांतिनसोंभांति  
 भोयि, गुणनाहेरानोगुणगाहकहेरानोहै ९ दे  
 खतकेनीकेपरिणामबहुआदरके, देखतभलाई  
 सदाजीवमेंजररहैं । भेदभेदपूछैमूछैटेवतनआवे  
 लाज, पापकेसमूहसिन्धु आंखिनअरेरहैं ॥



कादर कहत जे नटी न केतला शिवे को, हाट बाट हू  
 में दरबार में खरे रहैं । निन्दा को जु नेम जिन्हें चुग-  
 ली आधार पर, स्वारथ मिटाइ बेकी खोज ही परे रहैं  
 १० सूरताई आंधरे में दहताई पाहन में, नासिका  
 चना निमध्य नौ न रही हाट में । धर्म रहो पोथि न ब  
 ड़ाई रही वृक्ष न बंधे गपरा पातिन में पानी रह्यो घाट  
 में ॥ यह कलिकाल ने बिहाल कियो सब जग, ना  
 यक सुकवि कैसी बनी है कुठाट में । रजरही पन्थ न र  
 जाई रही शीत काल, राई रही राई तेर नाई रही भाट  
 में ११ भोज भनै एते होत हल के हराम जादे, होश  
 हीन ही जन सौं हर्गिज हितै येना । कल ही कलंकी  
 कूर कृपण कुनामी काक, कपटी कुकर्म की कोधी किंचि  
 त हितै येना ॥ चूतिया चवाई चोर चंचल चलांक  
 चित्त, चोप चोप चखति न तरफ चितै येना । बदी  
 बदरा ही बदनामी बद कौल बद, बेदरद बेदिल  
 सौं बात हूबतै येना १२ जैसे फल भरे को बिहग



छांड़िदेत रूख, भुवा देखि सुवा छोड़े सेमरके  
 डारको । सुमनसुगन्धबिनजैसेअलिछोड़देत,  
 मोतीनरछोड़देतबिनाआबदारको ॥ जैसेसूखेता  
 लकोकुरंगछोड़देतमग, शिवदासचितफाटेछोड़  
 देतयारको । जैसेचक्रवाकदेशछोड़देतपावसमें,  
 तैसेकविछोड़देत ठाकुरलवारको १३ दातातेदु  
 नीमेंसूमकाजेजानियतइमि, कायरकोजानियेस  
 मरमाहेशूरते । पापीतेप्रकटपुण्यजानियेदुखीते  
 सुखी, निधनीकोजानियेसुधनीधनकूरते ॥ भा  
 खतसकलजानेभूपतेभिखारीचोर, साहुतेपिछा  
 नेऔचतुरचित्तकूरते । रातदिनसूरतेयोंकंचन  
 कचूरनर, जान्योजातयाविधिशहरवेशहरते १४  
 राजारावराजेबादशाहजेजहानजाने, हुकुमनमा  
 नहुकुमनतरआनेहैं । शूरवीरसंगनमेंसुघरप्रसं  
 गनमेंरीतिरसरंगनमेंअतिहीबखानेहैं ॥ श्याम  
 लालसुकविजहानमेंनतोसेभूप, खोजिहारेपात



पात आजके जमाने हैं । हम मरदाने जानि बिरद ब  
 खाने पर, द्वारे चोपदार कहै साहिब जनाने हैं १५  
 माया के निशान जे निशान अपकीरतिके, जानत  
 जहान कहं कहं ऊसरन सों । कुंज सी कुराही अंग ऐ  
 बी गुमराही गुनी, देखि अनखाय पगै पाप के कुरन  
 सों ॥ हरजू सुकवि कहै बचन अमोलन के, जात  
 कुरवात न बसाति असुरन सों । मांगत इनाम कर  
 तार पै पुकारि कहों, परै जनिकाम ऐ से समस सुरन  
 सों १६ गुन बिन धनु जैसे गुरु बिन ज्ञान जैसे, मान  
 बिन दान जैसे जल बिन सर है । कण्ठ बिन गीत जैसे  
 हित बिन प्रीत जैसे, वेश्यार सरीत जैसे फल बिन  
 तर है ॥ तार बिन जन्त्र जैसे स्याने बिन मन्त्र जैसे,  
 पुर्ष बिन नारि जैसे पुत्र बिन घर है । टोड़र सुकवि जैसे  
 मन में विचारि देखो, धर्म बिन धन जैसे पक्षी बिन पर  
 है १७ चन्द बिन रजनी सरोज बिन सरवर, तेज बिन  
 तुरंगमतंग बिन मदको । बिन सुत सद नितम्बि



नीसुपतिबिन, बिनधनधरमनृपतिबिनपदको ॥  
 बिनहरिभजनजगतसोहैजनकौन, नौनबिनभो  
 जनबिटपबिनछदको । प्राणनाथसरससभान  
 सोहैकबिबिन, विद्याबिनबातनानगरबिननद  
 को १८ विद्याबिनद्विजश्रौबगैचाबिनआमनको,  
 पानीबिनसावनसुहावननजानीहै । राजाबिनरा  
 जकाजराजनीतिशोचेबिन, पुण्यकीबसीठीक  
 होकैसेधौबखानीहै ॥ कहैजयदेवबिनहितकोहि  
 तूहैजैसे, साधबिनसंगतिकलङ्ककीनिशानीहै ।  
 पानीबिनसरजैसेदानबिनकरजैसे, शीलबिनन  
 रजैसेमोतीबिनपानीहै १९ ॥ छप्पय ॥ तजहुज  
 गतबिनभवनभवनतजितियबिनकीनी । तिय  
 तजिजनसुखदेयसुखतजिसम्पतिहीनी ॥ सम्प  
 तितजिबिनदानदानतजिजहँनविप्रमति । वि  
 प्रतजहुबिनधर्मधर्मतजियबिनभूपति ॥ तजि  
 भूपभूमि बिन भूमितजि दीहदुर्गाबिनजोबसै ।



तजिदुर्गसुकेशवदासकवि जहांनजलपूरणल  
 सै २० ॥ कवित्त ॥ शामिलमेंपीरमेंशरीरमेंनभेदरा  
 खैं, हिम्मतिकपटकोउघारेतोउघारिजाय । ऐसो  
 ठानठानेतोबिनाहूयन्त्रमन्त्रकिये, सांपकेजहरको  
 उतारेतोउतरिजाय ॥ ठाकुरकहतकछूकठिनन  
 जानोअब, हिम्मतिकियेतेकहोकहानसुधरिजा  
 य । चारिजनेचारिहूदिशातेचारोकोनगहि, मे  
 रुकोहलायकैउखारैंतोउखारिजाय २१ बैरप्रीति  
 करिवेकीमनमेंनराखैंशंक, राजारंकदेखिवैनछा  
 तीधकधाकरी । आपनीउमंगकीनिवाहिवेकी  
 चाहजिन्हैं, एकसोदिखात तिन्हैंबाघऔरबाक  
 री ॥ ठाकुरकहतमैंबिचारिकैबिचारदेख्यो, यहै  
 मरदाननकीटेकबातआकरी । गहीतौनगही  
 जौन छोड़ी तौनछोड़दई, करीतौन करीबातना  
 करीसोनाकरी २२ नटकोनधामनानपुंसकको  
 कामनाहिं, ऋणीकोअरामवामवेश्यानासहेल



री । जुवाकोनशोचमासहारीकोनदयाहोत, का  
मीकोननातो गोतझायानसहेलरी ॥ देवीदास  
बमुधामेंवणिक न सुनोसाधु, कूकर को धीरजन  
मायाहैसहेलरी । चोरकोनयारबटपारकोनप्रीति  
होत, लाबरनमीतहोत सौतिनासहेलरी २३  
जारकोविचारकहागणिकाकोलाजकहा, गदहा  
कोपानकहाआंधरेकोआरसी । निर्गुणीकोगुण  
कहादानकहा दारिदीको, सेवाकहासूमकीअर  
ण्डकीसीडारसी ॥ मदपीकोशुचाकहासांचकहा  
लंपटीको, नीचकोबचनकहाशयारकीपुकारसी ।  
टोड़रसुकबिएसेहठते न टारेटरैं, भावेकहौसूधी  
बात भावेकहौफारसी २४ कंजबनमानिमूनहं  
सजनआयफिरैं, गन्धवनभृङ्गनको भङ्गकरिडारे  
तैं । पाकेफलजानिशुकपुंजपछितानेआय, पाय  
कैवसन्तबातबृथापातडारेतैं ॥ दूरितैंबिलोकि  
अरुणाईअतिफूलनकी, आमिषअधारगीधवा



यसविडारे तें । एरे तरुसेमरकेसिफततिहारी  
 कहा, आशदियेपक्षिननिराशकरिडारेतें २५ ॥  
 छप्पय ॥ समैमेघवरपंतसमैशिरहोइसबैफल ।  
 तरुनापानीसमैसमैईजातिदेइबल ॥ समैसिद्ध  
 हूमिलैसमैपाण्डितहूचूकै । समैप्रीतिचितघटैस  
 मैसरवरहूसूकै ॥ कोउद्वारजुआवैसमैसिर समै  
 पायगिरवरहिंगिर । गोविन्दअटलकबिनन्दक  
 हिजोकीजैसोसमैसिर २६ ॥ सवैया ॥ बिनभेदन  
 भेदनजानेकछू मतिकीअनुसारलहीसोलही ।  
 नहिंवेदपुराणकीरीतिकछू अनरीतिकीटेवगही  
 सोगही ॥ समुभायेनहींसमुभैगुरुकेगुरुकीअ  
 पमानलहीसोलही । यहतामसज्ञानअनन्यभनै  
 पुनिमूरखगांठिगहीसोगही २७ ॥ दोहा ॥ दुष्टन  
 छांड़ेदुष्टता, सज्जनतजैनहेत । कज्जलतजैनश्या  
 मता, मोतीतजैनसेत २८ गुणमेंऔगुणखोज  
 हीं, हियेनसमुभेनीच । ज्योंजुहीकेखेतमें, शूकर



खोजतकीच २६ अगरदुष्टजेजीवहैं, शिरतजि  
 अपयशलेहिं । सनतनखालकढायके, परतरब  
 न्धनदेहिं ३० सज्जनऐसोचाहिये, जैसोआकोदु  
 द्ध । औगुणऊपरगुणकरै, तोजानोकुलशुद्ध ३१॥  
 सवैया ॥ बैदकोबैदगुणीकोगुणीठगकोठगठूम  
 ककोमनभावै । कागकोकाग मरालमरालको कां  
 धगधाकोगधाखजुलावै ॥ कृष्णभनैबुधकोबुध  
 त्यो अरुरागीकोरागीमिलैसुरगावै । ज्ञानीसो  
 ज्ञानीकरैचरचा लबराकेढिगालबरासुखपावै ३२  
 बन्धुबिरोधकरोसिगरो भृगरोनितहोत सुधारस  
 चाटत । मित्रकरैकरनीरिपुकी धरनीधरदेखिन  
 न्यावानिपाटत ॥ रामकहैविषहोतसुधा घरनारि  
 सतीपतिसौचितफाटत । भाविधनाप्रातिकूलजबै  
 तबऊंटचढ़ेपरकूकरकाटत ३३ पायँविहीनकेपा  
 यँपैलोठ्योअकेलेहूजायघनेबनरोयो । आरसी  
 आंधरेआगेधरयो बहिरेसोंमतोकरिउत्तरजोयो॥



ऊसरमेंबरस्योबहुबारि पषाणकेऊपरपङ्कजबो  
 यो । दासवृथाजिनसाहबसूमकी सेवनमेंअपनो  
 दिनखोयो ३४ भूलिनदानकरैदमरी रणमेंनक  
 बाँकिरपानचलाइस । पोतगनायधरैघरमेंकरैभू  
 ठीसोपांचनमेंफरमाइस ॥ बातेंबनायकैनोनीनई  
 जिनयाचककोजियराभरमाइस । रामकहैनरहै  
 चिरचौकस चीकनेठाकुरकीठकुराइस ३५ पीन  
 सवारीप्रवीनमिलैं तौ कहांलौसुगन्धीसुगन्धसुं  
 घावै । कायरकोपिचढैरणमेंतौ कहांलगिचारण  
 चावबढावै ॥ जैसेगुणीकोमिलैनिगुणी तो पुखी  
 कहैक्योंकरताहिरिभावै । जैसेनपुंसकनाहमिलै  
 तोकहांलगिनारिशृंगारबनावै ३६ धोईसीचून  
 रीरूईसीकंचुकीतैसेसिंधोरासेनूरनचोखा । धौं  
 कबकालहंगाधराभावन पायोपराकहुँताजभरो  
 खा ॥ चूरीपरैकरतेसरकी तरकीचरकीसबबात  
 मेंधोखा । नेगीकहैहमआजुलख्योयहसूमयती



मचढ़ावअनोखा ३७ ॥ कवित्त ॥ पढ़ननदेतहैं  
 कवित्तबाजेभावनको, बाजेचुपचापसुनिनीबिसी  
 अचैरहैं । बाजेदशवीशगूढ़पूछिदशकूटनको,  
 मूढ़शतसाखिनकीचरचामचैरहैं ॥ बाजेअफसो  
 सकरैंबाजेराहरोसधरैं, बाजेदेभरोसदरबारमेंन  
 चैरहैं । बाजेसूमसूकादेतपाथरलगायछाती, बा  
 जेसूमसाहिबसुपारीसीअचैरहैं ३८ ह्वैकेमहारा  
 जहयहाथीपैचढ़ैतोकहा, जोपैबाहुबलनिजप्रज  
 निरखायोना । पढ़िपढ़िपण्डितप्रबीणहुभयेतो  
 कहा, बिनयविवेकयुतजोपैज्ञानगायोना ॥ अम्बु  
 जकहतधनधनिकभयोतोकहा, दानकरिजोपैनि  
 जहाथयशछायोना ॥ गरजिगरजिघनघोरनिकियो  
 तोकहा, चातककेचोंचमेंजुरंचनीरनायोना ३९ ॥  
 छप्पय ॥ जिहिमुच्छनधरिहाथकछूजगसुयशन  
 लीनो । जिहिमुच्छनधरिहाथकछूपरकाजनकी  
 नो ॥ जिहिमुच्छनधरिहाथकछूपरपारनजानी ।



जिहिमुच्छनधरिहाथ दीनलखिदयानआनी ॥  
 मुच्छनाहिंवेपुच्छसम कविभरमीउरआनिये ।  
 नहिंबचनलाजनहिंदानखगतिहिमुखमुच्छनजा  
 निये ४० जीभियोगअरुभोगजीभिसवरोगबढा  
 वै । जीभिकरैउद्योगजीभिलैकैदकरावै ॥ जीभि  
 स्वर्गलैजायजीभिसबनकैदिखावै । जीभिमिला  
 वैरामजीभिसबदेहधरावै ॥ जीभिओठएकत्रक  
 रिवांटसिहारेतोलिये । बैतालकहैविक्रमसुनोजी  
 भिसंभारेबोलिये ४१ टकाकरैकुलहूलटकामिर  
 दंगबजावै । टकाचढैसुखपालटकाशिरछत्रधरा  
 वै ॥ टकामाइअरुवापटकाभाइनकोभैया । टका  
 सासुअरुससुरटकाशिरलाडलडैया ॥ एकटका  
 विनटुकटुकाहोतरातअरुरातदिन । बैतालकहै  
 विक्रमसुनोधिकजीवनइकटकेविन४२ ॥ कवित्त ॥  
 तेलनीकोतिलकोजमेरकोफुलेलनीको, साहिब  
 ददेलनीकोसैलनीकोचन्दको । विद्याकोविवाद



नीकोरामगुणनादनीको, कोमलमधुरसदास्वाद  
 नीकोकन्दको ॥ गऊनवनीतनीको जेठहूकोशीत  
 नीको, श्रीपतिजमीतनीको बिनाफरफन्दको ।  
 जातरूपघटनीकोरेशमकोपटनीको, बंशीबटतट  
 नीकोनटनीकोनन्दको ४३ चोरीनीकीचोरकीसु  
 कविकीलबारीनीकी, गारीनीकीलागतीससुरपु  
 रधामकी । नाहींनीकीमानकीसयानकीजबान  
 नीकी, ताननीकीतिरछीकमाननीकीकामकी ॥  
 तातन्हकीजीतनीकी निगमप्रतीतनीकी, श्रीप  
 तिजुप्रीतिनीकीलागेहरिनामकी । रेवानीकीबा  
 नखेतमुदरीसुठेवानीकी, मेवानीकीकाबुलकीसे  
 वानीकीरामकी ४४ तालफीकोअजलकमलबि  
 नजलफीको, कहतसकलकबिहबिफीकोरुमको ।  
 बिनगुणरूपफीकोऊसरकोकूपफीको, परमअनू  
 पभूपफीकोबिनभूमको ॥ श्रीपतिसुकबिमहावेग  
 बिनतुरीफीको, जानतजहानसदाजोहफीकोधू



मको । मेहफीको फागुन अबालक को गेहफीको, ने  
हफीको तियको सनेहफीको सूमको ४५ सारसके  
नादनको बादना सुनत कहं, नाहकही बक बाददा  
दुरमहाकरै । श्रीपतिसुकवि जहां ओजना सरोज  
नकी, फुलना फजूल जाहि चित्तदै चहाकरै ॥ बक  
नकी बानीकी बिराजति है राजधानी, काई सो कलि  
तपानी हेरत हहाकरै । घोंघनके जाल जामें नरई से  
वार ब्याल, ऐसे पापी ताल को मराल लै कहाकरै ४६  
खात हैं हराम दाम करत हराम काम, धाम धामति  
नहीं के अपय श्रवैंगे । दोजकमें जै हैं तब काटिका  
टिकी राखैं हैं, खापरी को गूढ़ का गटों टनि उड़ावैंगे ॥  
कहै करने श अबधु रसनिते बाजित जै, रोजा औनि  
माज अन्त यम कटिलावैंगे । कबिनके मामिले में क  
रै जौ नखामी तौन, निम कह रामी मेरे कफन न पावैं  
गे ४७ चूक जात जौ हरी जवाहिर परख जाने, चूक  
जात पाण्डित पढ़ैया वेद चारीके । चूक जात घोड़े को



चढ़ैया असवारपूरो, चूकजातवाजेरोजगाररोज  
 गारीके ॥ चूकजातमेघमेघराजनकीबातहूमें, ले  
 खीचूकजातयालिखैयालेखधारीके । बानकिरपा  
 नकोघलैयापूरोचूकजात, एकनहींचूकेहैंचुगुलचू  
 तमारीके ४८ बाबूदेतसैकरोंकरोरोबादशाहदेत,  
 लाखोंदेतराजारावहाथीघोड़ासँडिया । साहुदेत  
 सत्तरपचासजमींदारदेत, तीसदेतफौजदारबीस  
 देतबँडिया ॥ चौदेदेतचौधरीसवाईसातसूमदेत,  
 पांचदेतकानागोयचारदेतडँडिया । तीनदेततेली  
 सुतमोलीहूमें एकदेत, अधमअधेलीदेतसूका  
 देतगँडिया ४९ जामेंदुअधेलीचारपावलीदु-  
 अन्नीआठ, तामेंपुनिआनलखोसोरहसमातहै ।  
 बत्तिसअधन्नीजामेंचवसठपइसाहोत, एकसोअ  
 ठाइससुधेलागुनमातहै ॥ युगशतछप्पनछदाम  
 तामेंदेखियत, दमरीसुपांचशतबारहलखातहै ।  
 कठिनसमैयाकलिकालकोकुटिलदेया, सगलरूपै



याभैयाकापैदियोजातहै ५० पण्डितनकाजेसी  
 खेभागवतज्ञानगीता, श्रोताहेतसीखेसारवेदन  
 कोवांचिवो । कबिनकेकाजेसीखेपिंगलपुरानछ  
 न्द, दोहागाहचौपईकबित्तनकोसांचिवो ॥ कलां  
 वतकाजेरागमाभीसबसीखलीने, आपमुखगा  
 वेंरागरागिनीनरांचिवो । देवेकाजेमहासूमइतने  
 कसबजाने, कसररहीहैइकताताथेईनाचिवो ५१  
 दोहराकबित्तबैतगजलसुनावैकोय, छन्दहूसुनावै  
 ताहिदेतनपसमहै । पाहुनीजोआवेताहिपानि  
 हूनदेतसब, जानतजहानयहकुलकीरसमहै ॥  
 मोहररुपैयाकहोकौड़ीकोचलावैकौन, बाहिरन  
 जानपावैभवनकीभसमहै । लेइबेकोहोयतो  
 हजारोंपरहाथउड़े, बाजेबाजेलोगनकोदेबेकोक  
 समहै ५२ देखतकेद्रूमनमेंदीरघसुभायमान,  
 कीरफलचाखिबेकोताकोमनठग्योहै । लालफल  
 देखिकेजटानमड़रानलागे, देखतबटोहीबहुतेरे



डगमग्यो है ॥ गंगकहै फलफूटे भवा उधरान लागे,  
 सबन निराश है केनि जगृह भग्यो है । ऐसो फल ही  
 न वृक्ष भयो बसुधामें यारो, सेमर अभागा बहु तेरन  
 कोठग्यो है ५३ कबि को न माने औ न ज्ञान गुरु लो  
 गन को, हरि की न भक्ति है न दान न भिखारी में । मा  
 ने अहमेव हम आयनर देव मेरी, करै सब सेव ऐसे  
 भूले डौल भारी में ॥ कहै युगराज महाधर्म को न  
 काज कछू, बैठ के समाज बात कहै ऐंड दारी में । रा  
 जीन सिपाह और जंग की उमाह जहां, यश की न  
 चाह ऐसी थूक सरदारी में ५४ कौन काज भौरन को  
 कमल बुलावत हैं, कौन काज वृक्षन परे रुमड़ रात  
 हैं । चन्द्रमा की चिट्ठी कहूं गइ है चकोरन को, मेघ  
 की गराज तेम यूर हरषात हैं ॥ आज लों सरोवर को  
 हंसना बुलायो कहूं, दौर २ फेर २ योही कुररात  
 हैं । बूझि देखी गुणी जन पण्डित प्रवीण लोग,  
 जहां भाव देखे तहां आप ही सो जात हैं ५५ चन्द्रमा



पैदावाजिमिकरतचकोरगन, घननपैदावाकैम-  
यूरहरपातहैं । भानपरदावाकरविकसतकंजपुंज,  
स्वातीबुन्ददावाकरचातकचचातहैं ॥ सुकविनि  
हालजैसेकरीकेकपोलनपै, अलिनअवलिकरि  
नितमडरातहैं । ऐसेमहराजनपैदावाकविराज  
नको, धूतनकेद्वारेकहूंमूतननजातहैं ५६ सा  
हूभयेसूमड़ासुबादशाहहीनहद, खगगेखगरटन  
खसालाबेचखाईहै । भोलेभयेभूपतिकनौड़ेधनी  
वंतसब, मूरखमहन्तअन्धदेतनादिखाईहै ॥ का  
यथकपूतभयेकूररजपूतधूत, बनियांवरूथपेखि  
पुंजपछताईहै । काकैढिगजाईकाहिकवितसुना  
ईभाई, अबकविताईरहीफजिहतिताईहै ५७  
ऐसे २ दानीपूरेप्रकटभेकलिबीच, देवेंनादिवावें  
आपपायाकरेंनासहैं । नेंनासुनावेंदुखदीनताकी  
बातकछू, निपटअजानहूकेबैठतखमोसहैं ॥ क  
हतनचीजचीजसेत २ एकसार, देखेंनादिखावें



आप आंखें नाहिं गोस हैं । सैलन को चलैं तब गढ़ ही  
 तेशोर होत, बचो २ हटो २ फीकी पोस २ हैं ५८ ॥  
 सवैया ॥ आंधरे को प्रति बिम्ब कहा बहिरे को कहा  
 सुरराग को ताने । आदी के स्वाद कहा कपिको पर  
 नीच कहा उपकार को माने ॥ भेड़ कहा ले करै बुकवा  
 हरवाह जवाहिर का पहिचाने । जाने कहा हिजरा  
 रतिकी गति आखर की गति का खर जाने ५९ ॥  
 कवित्त ॥ पण्डित कविन्दन की बूझ है न कूरन के,  
 कथक कलां वत फिरत तान गाने को । कहत उदेस  
 देखि समर सपूतन को, घोड़े के चढ़ै यन को चनान  
 चबाने को ॥ आदर सो लेत ताहि जौ न वाहियात ब  
 कै, छोड़ि के पुराण वेद धरम के बाने को । जुरि के  
 गवांर गढ़ा बैठ चवह द्वादत, आल्हा के गवैया को  
 रुपैयारो जखाने को ६० ॥ सवैया ॥ चरचा कुट  
 नीन की नीकी लगै भडु आन की खातिर ताजी रहैं ।  
 राँड़ियान की लागैं भली बतियां गँड़ियान की त्यों



सिरताजीरहें ॥ नहीं जात है बात गुनी की सुनी कवि  
 को बिद ते इतरा जीरहें । निशि बासर पास जो पाजी  
 रहें तौ मही पया काल केरा जीरहें ६१ ॥ कवित्त ॥  
 पाये कामदारी फूट जात नैन चारी पर, जात तोंद  
 भारी कहै अमली सो आम हैं । लौंडिया पियारी  
 छोड़ देत निजनारी करै, मंगन सोरारी तहां खोवें  
 खरेदाम हैं ॥ नीच हितकारी बिना लाभ बैरवारी  
 राज, काज के बिगारी निशि दिन आठो याम हैं ।  
 सबही सोरारी कबिहू सोदवादारी ऐसो, निपटन  
 काम कामदारन के काम हैं ६२ मेधा होत फूहरक  
 लपतरु थहर परमहंस चूहर की होत परिपाटी को ।  
 भूपति मँगैया होत ठांठ काम गैया होत, गैवर चुअ  
 त मद चेरो होत चाटी को ॥ कहै शिवनाथ कवि पु  
 ण्य की न्हे पाप होत, बैरी निज बाप होत सांप होत  
 साटी को । स्यार सुत शेर होत निधन कुबेर होत,  
 दिनन को फेर होत मेर होत माटी को ६३ सीख्यो



धनधामसबकामकेसुधारिवेको, सीख्योअभिरा  
 मबामराखतहजूरमें । सीख्योसरजामगढ़कोट  
 कोगिरायवेको, सीख्योशमशेरबांधिकाटिअरि  
 ऊरमें ॥ सीख्योकुलयन्त्रमन्त्रतन्त्रहुकीबातसी  
 ख्यो, पिंगलपुराणसीख्योबह्योजातकरमें । कहै  
 कृपारामसबसीखबोनिकामएक, बोलिबोनसी  
 ख्योसबसीख्योगयोधूरमें ६४ फूटगयेहीराकीबि  
 कानीकनीहाटहाट, काहूघाटमालकाहूबाढ़मो  
 लकोलयो । टूटिगईलङ्काफूटिमिल्योजोबिभीष  
 णहै, रावणसमेतवंशआसमानकोगयो ॥ कहै  
 कविगंगदुरयाधनसेछत्रधारी, तनककेफूटेतेगु  
 मानवाकोनैगयो । फूटेतेनरदउठिजातबाजीचौ  
 परकी, आपुसकेफूटेकहोकौनकोभलोभयो ६५  
 दानीकोउनाहिंनगुलाबदानीपीकदानी, गोंददा  
 नीघनीशोभाइनहींमेलहेहैं । मानतगुणीकोगु  
 णहीमेंप्रगटतदेखो, यातेगुणीजनमनसावधानी



गहेहैं ॥ हयदानहेमदानगजदानभूमिदान, सु  
 कबिसुनायेऔपुराणनमेंकहेहैं । अबतोकमलदा  
 नजजदानजामदानखानदानपानदान कहिबेको  
 रहेहैं ६६ पौरकेकिवारदेतघरेसबैगारिदेत, साधु  
 नकोदोषदेतप्रीतिनाचहतहैं । मांगनेकोज्वाबदे  
 तबातकहेरोयदेत, लेतदेतभांजिदेतऐसेनिबह  
 तहैं ॥ बागेहूकेबन्ददेतबारनकीगांठदेत, पर्दन  
 कीकाछदेतकाममेंरहतहैं । एतेपैसबैईकहैंलाला  
 कछूदेतनाहीं, लालाजूतोआठोयामदेतईरहत  
 हैं ६७ एरीमेरीबीरकंतकौनकेकमानजाहि, रा  
 जनकीमतिपैनचलतउपाउरी । तनद्युतिछीनभ  
 ईमनुवांमलीनभयो, मनसाविकलकलकरतन  
 बाउरी ॥ ठाकुरकहतयाजहानपैजरबफैली, भई  
 मतिमैलीकछूयतनबताउरी । खैबेकाजेसौहरा  
 खीकीबेकाजेपापराखी, लीबेकाजेअपयशदीबे  
 काजेलाउरी ६८ जोपैइनद्रोहिनकोदौलतनहो



तीतोसु, पन्थिनकेपायँयहांभूलिहूनपरते । भा  
 गवानभागनकेजानकेअधीनहोत, कापैयेकमी  
 नेकलाकोटिनविचरते ॥ ठाकुरकहतगुणगान  
 कोबिवादकर, आपनीसभामेंबैठिकौनकोनिदर  
 ते । हायतोसुजाननकेउरजनहोतीतौ, अजान  
 येअभागेअभिमानकापैकरते ६६ मानेसनमाने  
 तेईमानेसनमानेसन, मानेसनमानेसनमानपाइ  
 यतुहै । कहैकबिदूलहअजानेअपमानेअप, मा  
 नसोसदनतिनहींकोछाइयतुहै ॥ जानतहैंजेऊते  
 ऊजातहैंबिरानेद्वार, जानबूझभूलेतिनकोसुना  
 इयतुहै । कामबशपरेकोऊगहतगरूरतौ वा,  
 आपनीजरूरजाजरूरजाइयतुहै ७० कोरीवच  
 मारचिरीमारकोजुयारकर, प्यारकरसदनाश्वप  
 चमनभायेहैं । छिपियाकुहांरनाऊदाऊकेसुदामे  
 टेरो, गीधकेअगाऊहोकेजायगुनगायेहैं ॥ घा  
 सीरामराजीहोविदुरघरभाजीखाई, पाजीभिल



नीकेबेरजठेमुँहलायेहैं । कहियेकहांलोंकलिका  
लकेअंदेशऐसे, नीचरंगीठाकुरठिकानेहोतआ  
येहैं ७१ पृथुसेपृथीशसेप्रियव्रतसेपातुरको, भां  
इनकोभोजसेहमेशामौजकैबेको । कुटनीकोकर  
नकलांवतकोकल्पतरु, बलिसमभयेबहुरूपिन  
कोज्यैबेको ॥ परमउदारडांडलाखनकोभरिबे  
को, दारूकेविशेषदामरातदिनप्यैबेको । खरची  
कीतंगीहैदिवानजूकोदोयभांति, ईश्वरनिमित्त  
औकवीश्वरकेदैबेको ७२ स्यारनकेशादीबकवा  
दीश्वानसिकरन, गीधनकीगादीबैठिदेखेकोकढ़  
तहैं । होड़ाहोड़ीहाड़बोटीबोटीबांटलेहैंहम, ऐसे  
कहेचील्हनकेमण्डपमढ़तहैं ॥ गाड़तेपरतशो  
कसाड़ापरेपांयनमें, सभामेंधसतदुरगन्धसौम  
ढतहैं । जीवजन्तुजोरजहांतहांकरैंशोरसब, सा  
हिबकेघोड़ाआजबाहिरकढ़तहैं ७३ ॥ सवैया ॥  
सूरजकेरथलागेरहो याकेआगेभयोकईबेरकन्है



या । लोमशकेलरिकार्डकेखेलको भलिगयोज  
 गको उपजैया ॥ ऐसोतुरंगमँगायकेभूपतिदानको  
 काढोदरिद्रकोछैया । भुएडनकागलगेफिरैसंगम  
 नोयहकागभुशुएिडकेभैया ७४ ॥ कवित्त ॥ काग  
 नकोभागअनुरागसबगीधनके, चाहिअंगअंग  
 नमेंस्यारनसतायोहै । पुरोकमपुअसोंकलेवरक  
 लितजाको, जुरिदशपांचयोधाजोमसोंउठायो  
 है ॥ कहैमिथिलेशलागैअनुजभुशुएिडकैसो,  
 लोहकोनलेशबेशविधिनावनायोहै । दीरघदिन  
 नकोसुजाहिरदिशानमांभ, ऐसोबरबाजकबिरा  
 जकोबतायोहै ७५ घोड़ातोपैकाकोकहुजाहीको  
 मेंचाकरहैं, काकोकहुचाकरतजाकोयहघोड़ा  
 है । नामक्योंनलेतकाहेतूहीक्योंनपूछेजाय, दे  
 दिखायदेखहीतेपरैआंखफोड़ाहै ॥ एकदिनाना  
 मलयोअन्नआधीरातमिल्यो, सोभीगिरयो श्वा  
 नखायोनिपटनिहोड़ाहै । नामतोदिवानजूकोल



येकईवर्षभये, सुनेनामकाननमेंपरोजातखोड़ा  
 है ७६ ॥ सवैया ॥ ईंटकोबन्धननीमकोचन्दननी  
 चेकोनन्दनवामकोघूसा । मातेकीगानडफाली  
 कीतान औगंगाकोज्ञानकपूतकोरूसा ॥ रंककी  
 रीभऔमौजीकीखीभ अजानकीप्रीतिजुआर  
 कोचूसा । राजकोदूसरोहरीकोतीसरोरेंडकोमू  
 सरोखासरखूसा ७७ कादरताजलोंभिक्षुकला  
 जलोंबीनअवाजलोंलाबरलेवा । पूसकेमासमें  
 फूसकोतापनो भूतकोजापनोभांभरीखेवा ॥ हैं  
 भगवन्तइतेनहिंकामके रामकेनामकेहोहिनले  
 वा । साधुकोलूटनोधर्मकोछूटनोधूमकोघोटनो  
 समकीसेवा ७८ पापकीसिद्धिसदाअणबृद्धि  
 सुकीरतिआपनीआपकहीकी । दुःखकोदानजु  
 सतकन्हान औदासीकीसंततिसंततफीकी ॥ बे  
 टीकेभोजनभूषणडांडको केशवप्रीतिसदापरती  
 की । युद्धमेंलाजदयाअरिकेअरुब्राह्मणजातिते



जीतिननीकी ७६ पातकहानिपितासँगहारिवो  
 गर्भकेशलनतेडरियेजू । तालनकोबँधबन्धधरोर  
 को नार्थकेसाथचिताजरियेजू ॥ पत्रफटैऔकटै  
 ऋणकेशवकेसहूतीरथमेंमरियेजू । नीकीसदास  
 सुरारिकीगारिसुडांडभलोजुगयाभरियेजू ८० ॥  
 घाघ ॥ बनियकसखरजठकुरकहीन । बैदकपूत  
 व्याधिनहिंचीन ॥ परिडतचुप २ बेश्यामइल ।  
 कहेघाघपांचोघरगइल ८१ ॥ सवैया ॥ पुण्यको  
 पापसदासमुझैअरुपापकोपुण्यगनैसबकालमें ।  
 जानसोराखैहियेरिपुताऔअजानसोंप्रीतिबकैब  
 हुगालमें ॥ कारेकुरूपकुनामिनकोभरियामिनिहा  
 जिरराखेनिरालमें । शीलकोलेशनआदरकोपर  
 भलेरहैमनमेंकिभुवालमें ८२ कागसोंकानलिये  
 ईरहैयुगमित्रनमेंकरैहांकिबिछोहा । भेदकेकाज  
 कितेकुटनानकोसाजेरहैसबलेनकोजोहा ॥ लाल  
 चंदैभरमायेरहैचिकनीबतियानकैराखतमोहा ।



नातको जानन देत नगीच रहै परघात में नित्य पचो  
 हा ८३ हैं जितने कलही कपटी अरु क्रोधी कुनामी  
 कुमारगी भारी । चौकन चूगुली खोर चुहेड़ा चवाई  
 चलां करुलावर भारी ॥ भावत हैं जन एते भुवाल  
 को पास न जाय सकै निजनारी । छोकरे बारह पांच  
 के भीतर घेर रहैं फरमावरदारी ८४ ॥ कवित्त ॥  
 देवता ते सुर औ असुर कहै दानव ते, दाई को सुधाय  
 दाल पैतिये लहत है । दर्पन ते मुकुर औ दाख ते मुन  
 का कहै, दास ते खवास कहि कहि निबहत है ॥ दे  
 वी सों भवानी और देहरा सों कहै मठ, रैन दिन घा  
 सी राम याही तो चहत है । दाना सों चबेना त्यों ही  
 दीप सों चिराग कहै, देय बेके डरते सो दानाना कहत  
 है ८५ लक्षन पुरी के सब लक्षन बिलोकियत, अक्ष  
 न में ओट दौ बिलक्षन हँस्यो करें । कोटिकुलटा के भा  
 वराजत छटा के गुण, शील अंगना के अंगना के स  
 रस्यो करें ॥ बसै बड़े गांव बीच चुगल जनाना तौ न,



बिहँसिबिहँसिमनमानेबिहँस्योकरैं । हासनाक  
 रतबड़ीत्रासनाकरतप्रीति, शासनाकेमाहँजौन  
 आसनाकख्योकरैं ८६ ऊंचीचोलीचिक्कमिरसी  
 दांतनमेंबातनमें, बारबारहेरिहेरिमनमुसुकाने  
 हैं । मुखकेनदरशपरशमरदुमिनके, लैरहँमुकुर  
 औअतरअंगसानेहैं । बेनीकबिकहैबनेठनेरहैं  
 आठोयाम, निपटनकामकहंकाहूकेनमानेहैं ॥  
 अशयकेखानेजिनकबिनब्रखानेजिन, ऐसेपैन्हे  
 बानेतेजनानेसमजानेहैं ८७ महामिहींजामापा  
 यजामागुलबदनका, चीराचारुबान्हेतुराजरीके  
 निसारेहैं । तकियालगायबैठे हुक्कापेचवान  
 पीयें, खिज्मतगुजारिनतेकरतइसारेहैं ॥ बेनी  
 कबिकहैआहिऊहिमेंप्रबीणबड़े, धरमनचीन्हैं  
 लाजशरमबिसारेहैं । खायबेशखानेआयबैठें  
 खसखानेऐसे, लाखहजनानेलखनऊमेंनिहारे  
 हैं ८८ सूमपतिनीसोंकहै सुनुसपने की बात,



अकथकहानीरातबरबसहारोतो । चानीमेंखरो  
तो जिमीगाड़केधरोतोताहि, मनमेंविचारिखोदि  
हाथकेनिकारोतो ॥ कहैकबिरामकविआयोइक  
ताहीसमै, कवितपढ़ोतोहोंतोदीबोअनुसारोतो ।  
होतोकुलदागबड़ेजेठनकेभागअरे, जागनापरो  
तोमैरुपैयादयडारोतो ८६ दाताघरहोतीतोक  
दरतेरीजानीजाती, आईहैभलेघरबधाईबजवा  
वरी । खानेतहखाननमेंआनिकेबसेरोलेहु, हो  
हुनउदासचितचौगुनोबढावरी ॥ खैहोंनाखियै  
होंमरिजैहोंतौसिखायजैहों यहीपूतनातिनको  
आपनोसुभावरी । दमरीनदैहोंकबोंजानेमेंभि  
खारिनको,सूमकहैसंपतिसोंबैठीगीतगावरी ६०  
आजकालपरसोंघरीपलबरसजाको, औधकेन  
आशऋषिलोमशलहतहैं । सनमुखभिक्षुकवि  
लोकिविवरणहोत, हाथजोरिशीशनायपांयनप  
रतहैं ॥ स्वादहीनसुन्दरइंद्वारनकेफलऐसे, बने



ठने रहें पै न कबि सरहत हैं । समन के सरिता बिलो  
 कि अवगाहियत, देत शठनाहीं अरु नाहीं ना कहत  
 हैं ६१ अगन वचाये शुभचारो मननाये अरु,  
 उक्त उपजाय कै बिसारो नाम हरिका । लोभ के अ  
 जान में सयान सब भूलि गये, की बे परे ऐसई अधम  
 ऐसे अरिका ॥ कहैं कबिलोग हमदान की कहाँ लों  
 कहैं, मांगे से न दियो जाय जा सो द्वै कखरिका । सम  
 के कबित्त करि मन में गलानि होत, परै पछताय बो  
 छिनार कै खेलरिका ६२ ॥ सवैया ॥ जल पीवै तो  
 पीवै न खावै कछु जेहि चित्त नहीं अभिलाखि बेहै ।  
 बर चित्त की बात कछु ना करै मन हूँ ते कछु नहीं भाखि  
 बेहै ॥ नित नित कबित्त कहै यश के जेहि प्रेम सुधा  
 रस चाखि बेहै । कहं कोऊ जो ऐसो मिलै कबि एक  
 सुतो हम हूँ कहैं राखि बेहै ६३ ॥ कवित्त ॥ काहु  
 एकदा से कहूं साहिब के आस में किते कदिन बीते  
 रीते सब भांति भल है । व्यथा जो बिनै ते करै उतराय



है सोल है, सेवाफल है हीर है यामें नहीं चल है ॥  
 एक दिन हासहित आयों प्रभु पास तन, राखोन  
 पुरानो वास कोऊ एक थल है । करत प्रणाम सो बि  
 हँसि बोले यह कहा, कह्यो कर जोरियह सेवा ही को  
 फल है ६४ ईश के भजन में न भूसुर के तन में न,  
 रंक धाम अनमें कहें न बृन्दावन में । ज्ञाति गुरु  
 जन में न धोखे पितृगन में, न उठे कबितन में न वेद  
 उचरन में ॥ कहै कबिराम ते बसत प्रेत तन में बि  
 चारि देखो छन में दयान जा के तन में । कहा परगन  
 में बनाय धनीगन में न, लागे हरिजन में तो थूक ऐसे  
 धन में ६५ बाने मरदाने के हेराने हैं न हेरे मिलैं,  
 चेरे मिले काम के जनाने से बदर है । ताने जेतन तते  
 ऊचलत उत्ताने ताकि, तब हं बिकाने पैलड़ावत स  
 दर है ॥ युगल किशोर ऐन कानुन कदर पावैं, वेद औ  
 पुराणन कोने कना अदर है । बदर बुराई के भलाई  
 के भगाई भाई अब के जमाने में न दाने की कदर है ६६



दंभीदगाबाजिनकीबाढीहैअधिकथाप, ज्ञान  
 ध्यानधारिनकीबातबेप्रमानाहै । पूछतनकोऊ  
 कविकोविदप्रवीणनको, नकलीहरामिनकोहा  
 जिरखजानाहै ॥ ठाकुरकहतकलिकालकोप्रभाव  
 देखो, भूठीबातकहिकहिजनमसिरानाहै । बड़े  
 बड़ेसूबातेऊजातपापडूबायह, देखिजियऊबा  
 की अजुबाकारखानाहै ६७ राजनकीनीतिगई  
 मीतनकीप्रीतिगई, नारिनप्रतीतिगईजारजिय  
 भायोहै । शिष्यनकोभावगयोपंचनकोन्याव  
 गयो, सांचकोप्रभावगयोभूठहिसोहायोहै ॥  
 मेघनकीवृष्टिगईभूमिसुतो नष्टभई, सृष्टिपैसक  
 लविपरीतिदरशायोहै । कीजियेसहायहेकृपाक  
 रगोबिन्दलाल, कठिनकरालकलिकालबनिआ  
 योहै ६८ देखेगनिकाकेमनकाकेनअनन्दहोत,  
 सन्तहिजदेखेमनआगसीलगतहै । निन्दकन  
 कलवालेसालेसालओढ़बैठें, पण्डितपुरानसब



ठारेमें ठरत हैं ॥ कहै कबितोष जगताही को सपूत  
 कहै, छलबल करि परसंपति हरत हैं । भले अनभ  
 ले अनभले भले ठहरात, कलिके कुचाल कछु जानि  
 ना परत हैं ६६ बेदके पढ़ैया को अढ़ैया को न योग ला  
 गै, आल्हाके गवैया को रुपैया रोज खानो है ॥ होती  
 क्यों न होती गरे पोती कुल नारिन को, हारवार नारि  
 न को बसन खजानो है ॥ माखन कहत गुड़ पैसा को प  
 सेरी भर, पैसही को पैसा भर माहुर बिकानो है । यारो  
 गुण मानो और गुण को न दोष देहु, गुण ना हेरानो  
 गुण गाह कहेरानो है १०० ॥ सबैया ॥ बापददा को  
 जुशील न राखत दुर्जन सो नहिं दापद पेटा । सज्जन  
 सो नहिं शील निबाहत याचक सो नहिं प्रेमल पेटा ॥  
 द्वार खड़ेतिन्हैं बात न पूछत भीतर पांव पसारि कैले  
 टा । विप्र प्रसाद विचारि कहै बरुड बिमरे कुल बोरन  
 बेटा १०१ गर्ज परेतै करै बहु अर्ज परै पुनि धाय के पां  
 इनमें । जीमें दयान हयाहिय में हाठि दैत दगाये कु



दाइनमें ॥ रामनऐसीकठोरकहंहमदेखीहैजाइ  
 कसाइनमें । हैंवनियावनियायेकेसार्थीनभूलि  
 योवातमिठाइनमें १०२ चींटीलगीचहुंपायनमें  
 अरुमाछीलगीऔमछेवलगैयां । ऊपरकाकक  
 लोलैकरैंचिलिहयाचिंचियातफिरैंचहुंठैयां ॥ श्वा  
 ननघातलगायेरहैं अरुगीधसियारकीसिद्धरोसै  
 यां । घूमतघोड़फिरैकविदानकेनाकविलेतनले  
 तगोसैयां १०३ सांपसुशीलदयायुतनाहर का  
 कपवित्रऔसांचोजुआरी । पावकशीतलपाहन  
 कोमलरैनिअमावसकीउजियारी ॥ कायरधीर  
 सतीगणिका मतवारोकहामतवारोअनारी ।  
 मोतियरामविचारिकहेनहिदेखीसुनी नरनाहकी  
 यारी १०४ कानितजैंअपनेकुलकीतुरफैनसों  
 लीबेकोसानचलावैं । एककोदेतदिलाशाप्रसन्न  
 है एकसोंमोटरीलैघरआवैं ॥ हैंपरमेश्वरपंचन  
 मेंपरनेकनहींतिनकोउरलावैं । नर्कपरैंतिनकेपु



रिखाजे प्रपंचकरैं अरु पंचकहावैं १०५ पण्डित  
 पण्डित सो खलमण्डित शायर शायर सो सुखमा  
 ने । संतहि संत भनंत भले गुणवंतहि को गुणवंत  
 बखाने ॥ जा कहं जा पहें हेत नही कहिये सु कहाति  
 न की गति जाने । शूर को शूर सती को सती अरु दा  
 सयती को यती पहिंचाने १०६ नीति बुझायो सु  
 भायो सु प्रीति कै नेक नही तिन को सनमाने । हा  
 नि औ लाभ को बूझे नही मन दीने मिजाज बितान  
 को ताने ॥ सांच कह्यो गिरिधारन जू करत व्यकहा  
 सो नही पहिंचाने । केतो उपाय करो धरिचाय पै  
 मूरख दण्ड बिना नहि माने १०७ मारन के पन के  
 यदुराय रहे इत आवन आपु कहाई । जामें बड़े  
 कुल कानि नही हम यों गुनि रोके तिन्हें समुझाई ॥  
 सो उपकार गयो सिगरो अरु और हू गारी दई मन  
 भाई । मूरख के मधि में परिबो गिरिधारन है गुरु मू  
 रख ताई १०८ ॥ कवित्त ॥ देन कह्यो घोर ताहि



अबहींतूमांगतहै, अबहींतोघोराजबघोरीसों  
 लगाइये । तबजायजनिहैमहीनादशबारहमें,  
 यतनअनेकजगदीशजोजिवाइये ॥ पाछेदूध  
 प्यायपालिपोसिकेखवायवाय, मुहँदेलगामअ  
 सवारीकोसिखाइये । आपुचढिबेटाचढितिनहं  
 केनातीचढि, तबजायतोहिकहंघाइयेतोघा  
 इये १०६ धर्मकेनकर्मकेकुकर्मिनकेमूलमूढ़,  
 महामतिमन्दरहैंविषमसमीरके । हेमकेहैहित  
 केनपितुकेनमित्रनके, चित्तकेमलीनहैंअधीन  
 दलगीरके ॥ बानीबेदवानकेनकलमाकुरान  
 केन, रामरहमानकेनअयशीगंभीरके । विप्रके  
 नईशकेनपण्डितकवीशकेसो, बाजे २ बेशहूर  
 गुरुकेनपीरके ११० कृपणकंजूसबड़ेगुणकेम  
 जूसजेर, दैहैकननूसराखेनियतभिखारीमें ।  
 दानकोनजानेसनमानकोनअनेगुण, मानको  
 नमानेरहैंशिशुवरदारीमें ॥ ठाकुरकहतभली



बुरीकोनशोचैनेक, रातदिनदासचित्तराखेमारा  
 मारीमें । राजीनासिपाहऔनजंगकीउमाह  
 जिन्हें, जसकोनचाहऐसीथूकसरदारीमें १११  
 शौकशेरमारिवेकोसभामेंसुनावैसदा, स्यारहून  
 मारयो कहूं भारीकीभरीनको । हाथमेंनजाके  
 जोरसेरकेउठायवेको, जिह्वातेउठायोकरैपुञ्जशि  
 खरीनको ॥ ग्वालकविकहैश्रीयुधिष्ठिरसोसांचो  
 बनै, देतसबहीकोदामयामऔघरीनको । बाजे  
 बाजेभूपऐसेवेशरमहोयजात, राखलेतहाथीचा  
 रोडारतचिरीनको ११२ कुटिलकुटंगीहैकुरंगी  
 हैकुअंगीरूप, कायरकपूतपूतकुमतिकुसंगीहै ।  
 कंकीहैकलंकीबहुपापिनमैलंकीयह, खलहैखले  
 सीबैनबोलतदुरंगीहै ॥ भनैभुवनेशभेसभूतसों  
 दिखातयाको, मंगीहैमलीनभर्मभूतलमैदंगी  
 है । भंगीहैअनंगीहैअरंगीहैनरंगीबुद्धि, दंगीद  
 गाबाजहैतरंगीदेहतंगीहै ११३ ॥ सवैया ॥ द्वार



पै आये कै देखे कहातौ विराजर हेतहां भैरो के वाहन ।  
 भीतर जाय सभा के लखेतो सरासर सोहत शंभु के  
 वाहन ॥ पास सलाह करै याल गेर हैं कान हमेश  
 गनेश के वाहन । देवी के वाहन जानिके आये हैं  
 गादी पै देखेतो शीतला वाहन ११४ ॥ कवित्त ॥  
 दूध को कहत क्षीर दूब को सुघास कहै, दाढ़यूं को अ  
 नारनाम धरि के रहत हैं । दर्पण को आरसी त्यों  
 दल को कहत पत्र, दूनी को जहान कहि सुख को लह  
 त हैं ॥ बल्लभ दकार कहं कान परे वा के कबूं, छोड़ि  
 के म कान ह्वांते भागन चहत हैं । दाई हू को ताई ताई  
 कहि के पुकारैं और देय बे के डरते वेद दाना कहत  
 हैं ११५ तीयन पै ठूकैं औ अथाई बैठिनू के भूखें,  
 मानुष पै भूकैं करैं चाकर पै खिस्स । दर्पण निहारैं  
 पाग पंचनस वारैं दग, अंजन लगावैं नित्त मलें  
 दांत मिस्स ॥ मांगे जव पाप तो ऊमरि जाय बाप  
 वाको, देत नही दमरी और काढ़ देत खिस्स । मरुन



द्विधायबैठैहुक्कासुलगायआछे, डीलदारगु  
 म्वजअवाजदारफिरस ११६ देखतकेमोटेभाल  
 चन्दनखरोटेबने, बैसकेअधोटेकुलउत्तमकेजा  
 येहैं । ओढ़तदुशालामालमुँदरीदिखावैमूढ़,  
 करतकजाकीकामकहोकाकेआयेहैं ॥ कहैसीवा  
 रामसूधेतातकीनबूभेवात, पूछेतेनबोलेंमानो  
 हलाहलखायेहैं । रुदतीविलोकिहैबिसूरतिया  
 भारतमें, सूरतहरामरामकाहेकोबनायेहैं ११७  
 सत्यतेप्रतीतिहोयजाकीसबदेशनमें, सत्यतेसं  
 चाईऔरसत्यतेभलाईहै । सत्यहीसोंसुखपावै  
 यशऔधरमबढ़ै, सत्यहीतेलेवादेवासत्यतेबड़ा  
 ईहै ॥ साधूलालकहेहोयआदरबहुतयाते, मुक्ति  
 होतअन्तमाहिंपुण्यफलदाईहै । सत्यबिनामा  
 नुषकेदरजारहतनाहिं, यातेचतुराननसोसत्य  
 उपजाईहै ११८ जारपरेजोरजातजर्वपरेभूमि  
 जास, भूमिजातजोबनअनंगरसरसहे । गढ़ढाहि



जातगरुवाईश्रौगरबजात, जातसुखसाहिबीस  
 मूहसरबसहै ॥ कहेहेमनाथधनसम्पतिविपति  
 जात, जातदुखदारिद्ररुनदरबसहै । बागकटि  
 जातकुआंतालपटिजातनदी, नदघटिजातपैन  
 जातजगजसहै ॥ ११६ ॥

इति श्रीविचित्रोपदेशस्यप्रथमखण्डःसमाप्तिमगात् ॥





# इश्तहार ॥

जानकीमंगल मयटीकाभाषा वैजनाथजीकृत	....	॥॥
रसिकप्रिया सटीक	....	॥॥
गीतगोविन्द सटीक	....	॥॥
शङ्करदिग्विजय जदीद	....	॥॥
गंगालहरी जदीद	....	॥॥
यमुनालहरी ....	....	॥॥
जगद्धिनोद जदीद	....	॥॥
रुक्मिणीमंगल	....	॥॥
ऊषामंगल ....	....	॥॥
पंचरत्न ....	....	॥॥
कृष्णबाललीला	....	॥॥
उपदेशचन्द्रिका	....	॥॥
रामकलेवा जदीद	....	॥॥
तथा गुटका ....	....	॥॥

मिलने का पता—

रायबहादुर मुंशी प्रयागनारायण भार्गव,  
मालिक नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ.